(vii) HARDLES PUT UP BY RAILWAYS NEAR THE LEVEL CROSSING OF BARSETHI RAILWAY STATION, NEAR JAUNPUR.

डा० ए० यू० आजमी (जौनपुर) : जनाब डिप्टी स्पीकर साहब, मैं आपकी इजाजत से रूल 377 के तहत एक बहुत अहम मसले की तरफ रेलवे मिनिस्टर साहब का ध्यान दिलाना चाहता हूं।

मेरे क्षेत्र जौनपुर, उत्तर प्रदेश में एक रेलवे स्टेशन है बरसेठी। इस स्टेशन के पूरब में रेलवे लाइन को क्रास करती हुई पी० डब्ल्यू० डी० की सड़क गुजरती है। इसके अलावा उधर कोई सड़क और रास्ता नहीं है जिससे लोग चल सकें। इस क्रासिंग के लिए पी० डब्ल्यू० डी० ने 70 या 80 हजार रुपया रेलवे को बहुत पहले अदा कर दिया है। गालिबन 1979 में रेलवे ने इस क्रासिंग को ठीक न करके उलटा इसको चौड़े गार्टर गाड़ कर रेलवे लाइन के दोनों तरफ एक-एक लोहे की दीवार बना कर सड़क का रास्ता बिल्कुल रोक दिया। मैं भी इस रास्ते से गुजरा हूं। जाना जरूरी था इस लिए गाड़ी को पूरब से रेलवे लाइन पर कुदा कर गुजरा हूं। बैलगाड़ियां और दूसरी सवारियां इसी तरह से गुजरती हैं। कुछ बच जाती हैं और कुछ इस तरह से गुजरने से टूट-फूट का नुकसान उठा जाती हैं। मैं इस लिए भी कह रहा हूं कि मैं खुद भी इस रास्ते से गुजरा हूं और भुगता हूं और इस लिये भी कि वहां के लोगों ने बड़ी नाराजगी के साथ मेरे जरिये रेलवे मिनिस्टर से मांग की है, इसलिए भी कि यह रेलवे की जब-र्दस्त कोताही है, रेलवे मिनिस्टर से मांग करता हूँ कि इसे जल्द अज जल्द ठीक करा कर इस सड़क को वहां की जनता के लिए आने-जाने के काबिल बनायें और लोगों की दुशवारियां दूर करें।

[ڈاکٹر اے - یو - آعظمی (جونپور):

جناب ڈپٹی اسپیکر صاحب - میں آپ کی اجازت سے رول ۳۷۷ کے تحت ایک بہت اہم مسئلے کی طرف ریلوے منسٹر صاحب کا دھیان دلانا چاہتا ہوں -

میرے چیتر جونپور اُترپردیش میں ایک ریلوے اسٹیشن ہے ''برسیٹھی'' (*Barsethi*) اس اسٹیشن کے پورب میں ریلوے لائن کو کراس کرتی ہوئی پی - ڈبلیو - ڈی - کی سڑک گزرتی ہے - اس کے علاوہ ادھر کوئی سڑک اور راستہ نہیں ہے جس سے لوگ چل سکیں اس کراسنگ کے لئے پی - ڈبلیو - ڈی - نے ستر یا اسی ہزار روپئے ریلوے کو بہت پہلے ادا کر دیا ہے - غالباً ۱۹۷۹ع میں ریلوے نے اس کراسنگ کو ٹھیک نہ کر کے الٹا اس کو چوڑے گاٹر گاڑ کر ریلوے لائن کے دونوں طرف ایک ایک لوہے کی دیوار بنا کر سڑک کا راستہ بالکل روک دیا ہے - میں بھی اس راستے سے گزرا ہوں جانا ضروری تھا اس لئے گاڑی کو پورب سے ریلوے لائن پر کدا کر گزرا ہوں - بیل گاڑیاں اور دوسری سواریاں اسی طرح گزرتی ہیں - کچھ بچ جاتی ہیں اور کچھ اس

طرح گزرنے سے ٹوٹ پھوٹ کا نقصان اٹھا جاتی ہیں - میں اس لئے بھی کہہ رہا ہوں کہ میں خود بھی اس راستے سے گزرا ہوں اور بھگتا ہوں اور اس لئے بھی کہ وہاں کے لوگوں نے بڑی ناراضگی کے ساتھ میرے ذریعہ ریلوے منسٹر صاحب سے مانگ کی ہے - اور اس لئے بھی کہ یہ ریلوے کی زبردست کوتاہی ہے - ریلوے منسٹر صاحب سے مانگ کرتا ہوں کہ اسے جلد از جلد ٹھیک کرا کر اس سڑک کو وہاں کی جنتا کے لئے آنے جانے کے قابل بنائیں اور لوگوں کی دشواریاں دور کریں -]

14.53 hrs.

Cinematograph (Amendment) Bill—*Contd.*

MR. DEPUTY-SPEAKER : The House will now take up further consideration of the Cinematograph (Amendment) Bill. Shri Harish Chandra Rawat—absent. Shri Ram Pyare Panika. I would request Hon. Members not to take more than five minutes.

श्री राम प्यारे पनिका (राबर्ट्सगंज) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे चलचित्र (संशोधन) विधेयक पर बोलने का समय दिया। अभी दो रोज पहले या यूं कहा जाए कि कल ही हमारे माननीय मंत्री जी ने टी वी पर अपना बयान देते हुए कहा था कि हमारे देश में मनोरंजन के साधनों की बड़ी कमी है। दूसरे देशों की तुलना में, खासकर सोवियत रूस का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उसके मुकाबले तो हम बहुत ही पीछे हैं। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि सिनेमा और थिएटर्स का पूरी तरह से देश में फैलाव किया जाए—न केवल शहरों में बल्कि देहातों में भी। लेकिन आज इस सम्बन्ध में जो लोन या सहायता देने की योजना है उसमें बड़ी कठिनाइयां सामने आती हैं। नई स्टेजेज पर स्टेट गवर्नमेन्ट्स में कठिनाइयां आती हैं। इसलिए मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि इस बिल में ऐसा प्रावधान रखा जाए जिससे कि लोगों को डाइरेक्टली केन्द्र से सहायता मिल सके तथा गांवों में भी आवश्यकतानुसार इसका प्रसार हो सके।

दूसरी बात यह है कि आज समाज में यह आम चर्चा फैल रही है कि सिनेमा इस देश के नौजवानों के चरित्र-निर्माण में सहायक होने के बजाए विपरीत प्रभाव डाल रहा है।

मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं और मुझे याद है अभी हाल ही में हमारे देश के राष्ट्रपति जी ने इस पर चिन्ता प्रकट की थी कि जो सिनेमा प्रदर्शित किए जा रहे हैं, वे हमारी भारतीय संस्कृति के अनुकूल नहीं हैं। जो हमारे भारतीय संस्कृति और सभ्यता है, उसको हमारे देश के नागरिकों को नहीं प्रदर्शित किया जाता, बल्कि ज्यादा हमारी पिक्चर पाश्चात्य देशों की संस्कृति पर आधारित होती जा रही हैं। नतीजा यह हो रहा है कि हमारे देश के नवयुवकों में जो अपने देश की सभ्यता और संस्कृति के प्रति लगाव होना चाहिए, वह निश्चित तौर से उसका लगाव दूसरे देश की संस्कृति की ओर हो रहा है। कुछ हद तक यह भी कहा जा